प्रभु,
मैं – पानी – पृथ्वी का
प्राचीनतम नागरिक
आपसे कुछ कहने की अनुमति चाहता हूँ
यदि समय हो तो पिछले एक दिन का
हिसाब दूँ आपको

अब देखिए न
इतने दिनों बाद कल मेरे तट पर
एक चील आई
प्रभु, कितनी कम चीलें
दिखती हैं आजकल
आपको पता तो होगा
मर गईं वे!

पर जैसे भी हो
कल एक वो आई
और बैठ गई मेरे बाजू में
पहले चौंककर उसने इधर-उधर देखा
फिर अपनी लंबी चोंच गड़ा दी मेरे सीने में
और यह मुझे अच्छा लगता रहा प्रभु
लगता रहा जैसे घूँट-घूँट
मेरा जनमांतर हो रहा है एक चील के कंठ में
कंठ से रक्त में
रक्त से फिर एक नई चील में।

फिर काफ़ी समय बाद
दिन के कोई तीसरे पहर
एक जानवर आया हलकासा प्यासा
और मुझे पीने लगा चभर-चभर
इस अशिष्ट आवाज़ के लिए
क्षमा करें प्रभु
यह एक पशु के आनंद की आवाज़ थी
जिससे बेहतर कुछ नहीं था उसके जबड़ों के पास।

इस बीच बहुत से चिरई-चुरुंग
मानव-अनामुष
सब गुजरते रहे मेरे पास से होकर
बल्कि एक बार तो ऐसा लगा
कि सूरज के सातों घोड़े उतर आए हैं –
मेरे क़रीब – प्यास से बेहाल
पर असल में जो आया
वह एक चरवाहा था
अब कैसे बताऊँ प्रभु – क्योंकि आपको तो

प्यास कभी लगती नहीं –
कि वह कितना प्यासा था।

फिर ऐसा हुआ कि उसने हड़बड़ी में
मुझे चुल्लूभर उठाया
और क्या जाने क्या
उसे दिख गया मेरे भीतर
कि हिल उठा वह
और पूरा का पूरा मैं गिर पड़ा नीचे
शर्मिंदा हूँ प्रभु।
और इस घटना पर हिल रहा हूँ अब तक
पर कोई करे तो भी क्या
समय ऐसा ही कुछ ऐसा है
कि पानी नदी में हो
या किसी चेहरे पर
झाँक कर देखो तो तल में कचरा
कहीं दिख ही जाता है।

अंत में प्रभु,
अंतिम लेकिन सबसे ज़रूरी बात
वहाँ होंगे मेरे भाई-बन्धु
मंगल ग्रह या चाँद पर
पर यहाँ पृथ्वी पर मैं
यानी आपका मुँहलगा यह पानी
अब दुर्लभ होने के कगार तक
पहुँच चुका है।
पर चिंता की कोई बात नहीं
यह बाजारों का समय है
और वहाँ किसी रहस्यमय स्रोत से
मैं हमेशा मौजूद हूँ
पर अपराध क्षमा हो प्रभु
और यदि मैं झूठ बोलूं
तो जलकर हो जाऊं राख
कहते हैं इसमें—
आपकी भी सहमति है।